The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 1 | January 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

वर्तमान समय में स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों की भूमिका

डॉ० अनिल कुमार सैनी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

मगनलाल शाह राजकीय महाविद्यालय, मींग,

नारायणबगड़ (चमोली), उत्तराखण्ड, भारत

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Article History

Accepted: 12-01-2025

Published: 11-02-2025

Keywords:

प्रजातन्त्र, राष्ट्रवाद, जातीयता, संस्कृति एवं सभ्यता।

ABSTRACT

विवेकानन्द जी ने संस्कृति एवं धर्म की दुहाई देकर तत्कालीन सोये हुए भारतीयों को उनके गौरवमयी अतीत से परिचित कराया। भारत में ही नहीं अपितु पाश्चात्य देशों में भी उन्होंने वेदों और उपनिषदों के प्राचीन आत्मज्ञान का संदेश गुंजा दिया। विश्व के सम्मुख भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की सर्वोपरिता एवं श्रेष्ठता की साहसी घोषणा करने से उन हिन्दुओं में नई शक्ति तथा प्रेरणा का संचार हुआ; जो यूरोपीय सभ्यता व संस्कृति के सम्मुख स्वयं को निकृष्ट समझते थे। इस कारण भारतीयों में आत्म–गौरव के एक सशक्त भाव का उदय हुआ; परिणामस्वरूप भारतीयों में राष्ट्रीय पुनरुत्थान की भावना के जागृत होने में सहायता प्राप्त हुई। विवेकानन्द एक महान आध्यात्मवादी, राष्ट्र–निर्माता, नैतिकता के पुजारी तथा भारतीय संस्कृति के पोषक थे। वेद–वेदान्त के माध्यम से उन्होंने सिद्ध किया कि पश्चिम की तुलना में भारत का धर्म, संस्कृति, इतिहास, भाषा और ज्ञान–विज्ञान कहीं अधिक उन्नत एवं समृद्ध ळें आज के साम्प्रदायिक उथल–पुथल के युग में स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों की भूमिका असंदिग्ध है। मानव की स्वतंत्रता, भाई–चारे की भावना, शारीरिक–मानसिक निर्बलता को दूर करके एक सबल व्यक्ति निर्माण, समाज एवं राष्ट्र का निर्माण आदि उनकी प्रखर अभिव्यक्ति के रूप में उनके भाषणों और ग्रंथों में सम्मुख आता है।

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.14864163

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानन्द महान देशभक्त थे, इसलिए देश की दशा को देखकर वे प्रायः बहुत दुखी होते थे और कभी–कभी उनको लगता था कि वे समाज की बुराईयों पर वज्र की तरह टूट पड़ें। विवेकानन्द ने इस बात पर जोर दिया कि भारत में प्रचलित जाति–प्रथा के नियमों की जटिलता को उदार बनाया जाए। स्वामी विवेकानन्द वेदान्त सम्प्रदाय के तत्त्वज्ञानी थे। उन्होंने हिन्दू धर्म–दर्शन के सार्वभौम प्रचार के अपने स्वप्न को पूरा करने का निरन्तर प्रयत्न किया। उन्होंने अन्य दार्शनिकों की भांति राजनीतिक चिन्तन का कोई सम्प्रदाय स्थापित नहीं किया। किन्तु आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में उनका स्थान अग्रणी है; इसके दो प्रमुख कारण हैं– पहला, उनके व्यक्तित्व एवं शिक्षाओं का बंगाल के राष्ट्रवादी आन्दोलन पर गहरा प्रभाव पड़ा। दूसरा, स्वामी विवेकानन्द ने उस समय की कुछ ऐसी समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कराया, जिनको तत्काल हल करना आवश्यक हो गया था।

स्वामी विवेकानन्द का सम्पूर्ण जीवन और व्यक्तित्व भारतीय चीजों के प्रति प्रेम और सम्मान का जीवन्त उदाहरण था। इसलिए वे अप्रत्यक्ष रूप से विदेशी आधिपत्य के विरुद्ध विद्रोह के स्पष्ट प्रतीत बन गये।[1]

अतः आधुनिक भारत के राष्ट्रवादी चिन्तन को व्यवस्थित ढ़ंग से समझने के लिए विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों का अध्ययन आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध–पत्र के उद्देश्य अग्रलिखित हैं–

1. स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों का तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करना।
2. स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों के द्वारा वर्तमान राजनीतिक समस्याओं के समाधान ढूढ़ने का प्रयास करना।
3. स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों की वर्तमान समय में भूमिका ज्ञात करना।

अध्ययन प्रविधि

अध्ययन का विषय सैद्धान्तिक होने के कारण द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया गया है। द्वितीयक स्रोत में प्रकाशित पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं, अभिलेखों इत्यादि की सहायता ली गई है।

स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचार

विवेकानन्द का मानना था कि भारतीय इतिहास में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, "जिस प्रकार संगीत में एक प्रमुख स्वर होता हैए उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र का अपना तत्व होता है। भारत का तत्व धर्म है तथा समाज–सुधार एवं अन्य तत्व गौण हैं।"[2] इसलिए स्वामी जी ने राष्ट्रवाद की नींव को मजबूत करने के लिए कार्य किया।

समग्र मानव जाति की सेवा के साथ–साथ उनका भारतीय जनता की निर्धनता एवं अज्ञानता से मुक्ति का लक्ष्य राष्ट्रवाद और देशभक्ति का प्रतीक था। यहाँ हमें यह स्मरण रख लेना चाहिए कि उनके राष्ट्रवाद में संकुचित मनोवृत्ति का आभास कहीं नहीं मिलता है।

भारत के साथ उनका राजात्मक सम्बन्ध उन्हें संकुचित राष्ट्रवाद से मुक्त करता है। उसे सैन्य विजय की आकांक्षा से मुक्त करके उदार अन्तर्राष्ट्रीयवाद की ओर ले जाता है; जहाँ धर्म की एकरूपता की कल्पना सहज रूप में स्वामी जी ने की थी। अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के प्रसार के बिना समग्र मानव जाति की सेवा के आदर्शों की पूर्ति एकदम कठिन है।

स्वामी जी ने भारत की समस्याओं के प्रति जिस तरह अपनी दृष्टि को खुला रखा है वह उनके चेतन राष्ट्रवाद का प्रतीक है। पाश्चात्य देशों की यात्रा से लौटने के पश्चात् सम्पूर्ण भारत को उनका स्वागत–सत्कार करने का अवसर प्राप्त हुआ। मद्रास में 'भारत के भविष्य' के संदर्भ में विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था कि, "अन्य किसी देश की अपेक्षा भारत की समस्याएँ अधिक जटिल हैं। भाषा, जाति, धर्म, शासन व्यवस्था– ये सभी एक राष्ट्र की सृष्टि करते हैं। भारत में भाषाओं का एक विचित्र ढ़ंग का जमावड़ा है। दो भारतीय जातियों में आचार–व्यवहार आदि के सम्बन्ध में जितना अन्तर हैं, उतना अन्तर यूरोपीय तथा पूर्वी जातियों में नहीं है।"[3]

स्वामी जी का मन इस राष्ट्र की सेवा के लिए उद्यत था। वह सेवा भाव से इस जीवन में उस मिट्टी के प्रति अपने कर्त्तव्यों को सम्पन्न करना चाहते थे, जिसमें खेलकर उनका जीवन और दर्शन पुष्पित एवं पल्लवित हुआ था। "अब मेरी एक ही इच्छा है, इस देश को जगाना। इसकी महान विशालता जैसे कहीं सो गई है तथा इसे अपनी शक्ति पर कोई विश्वास नहीं है। यदि हम उसे एक बार उसकी आन्तरिक शक्ति को शाश्वत धर्म का ज्ञान कराते हुए जगा सकें; तब हम और हमारे स्वामी का जन्म निरर्थक नहीं होगा।"[4] इस भावाभिव्यक्ति में स्वामी जी की अन्तःवेदना मुखरित होती है। इस संन्यासी ने सम्पूर्ण जीवन आध्यात्मिक चिंतन के साथ–साथ विभिन्न प्रकार की सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं के चिन्तन तथा उन समस्याओं को दूर करने की प्रक्रिया के ढूंढ़ने में ही बिता दिया।

स्वामी जी का राष्ट्रवाद दो मुख्य आधार लेकर खड़ा है। धर्म ने उसे गति दी है और कर्म ने उसे प्रेरणा। स्वामी जी राष्ट्रीयता के लिए 'अभय' होने की दीक्षा देते हैं; जिस राष्ट्रीयता में दूसरी राष्ट्रीयता से डरने की प्रवृत्ति होगी वह राष्ट्रीयता न तो कभी अपना कल्याण कर सकती है और न ही अपने राष्ट्र का।

स्वामी जी धर्म को 'अभय' और 'शक्ति' का प्रतीक मानते थे। "जो धर्म मनुष्य के हृदय में शक्ति का संचार न करे, वह धर्म नहीं है चाहे वह उपनिषद्, गीता अथवा भागवत् का धर्म हो। शक्ति धर्म से महान है तथा शक्ति से महान कोई नहीं है।"[5] स्वामी जी ने शक्ति और अभय का दर्शन वेदान्त की व्याख्याओं के आधार पर प्रस्तुत किया। जब व्यक्ति अभय को अपने हृदय में धारण करके और अहम् का त्याग करके राष्ट्र के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करता है तभी व्यक्ति तथा राष्ट्र दोनों का विकास होता है।

निष्कर्ष

जिस समय भारत उदासीनता, निष्क्रियता व निराशा में डूबा हुआ था; उस समय स्वामी विवेकानन्द ने शक्ति एवं निर्भरता के सन्देश की गर्जना की और उन्होंने लोगों को शक्तिशाली बनने की प्रेरणा दी। 'शक्ति' ही स्वामी विवेकानन्द की भारतीय राष्ट्र को वसीयत है। जिस समय भारत का बौद्धिक वर्ग पश्चिम का अनुकरण करने में व्यस्त था, उस समय स्वामी जी ने निर्भीकतापूर्वक घोषणा की थी कि भारत से पश्चिम को बहुत कुछ सीखना है। विवेकानन्द की रचनाओं और उनके सन्देश को ध्यान में रखें बिना (भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलन के जन्म एवं विकास को तथा 1904 से 1907 के बीच राजनीतिक साहित्य के स्वर में जो परिवर्तन हुआ) उसे समझना सम्भव नहीं है।

स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवाद आध्यात्मिक राष्ट्रवाद था। उन्होंने भारतीय युवाओं को प्रेरित किया कि वे भारत के आध्यात्मिक उद्देश्य (मिशन) में विश्वास रखें। उन युवाओं के अन्दर स्वामी जी के दर्शन के आधार पर ही परम्परानिष्ठ राष्ट्रवाद का निर्माण हुआ। "जिन भारतीय युवाओं ने अपने वर्गों से सम्बन्ध–विच्छेद करके स्वयं को गुप्त समुदायों के रूप में संगठित किया और ब्रिटिश शासन को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए आतंक एवं हिंसा का समर्थन किया। आध्यात्मिक श्रेष्ठता के माध्यम से विश्व–विजय करने के इस रोमांचपूर्ण स्वप्न ने उन भारतीय युवा बुद्धिजीवियों में भी एक नई चेतना जाग्रत कर दी थी, जिनकी दयनीय आर्थिक स्थिति ने उन्हें व्याकुल कर रखा था।"[6]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत में स्थायी राष्ट्रवाद के निर्माण में स्वामी विवेकानन्द के राष्ट्रवादी विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका है; क्योंकि भारत में धर्म के आधार पर ही राष्ट्रवाद का निर्माण किया जा सकता है। किन्तु स्वामी विवेकानन्द पर साम्प्रदायिकता अथवा धर्मवादी संकीर्णता का आरोप नहीं लगाया जा सकता; क्योंकि स्वामी विवेकानन्द के अनुसार आध्यात्मिक और नैतिक प्रगति का शाश्वत नियम ही धर्म है।

सन्दर्भः

[1] वर्मा, विश्वनाथ प्रसाद (नवम्बर, 1958) : The Relations of Tilak and Vivekanand, The Vedanta Kesari, Sri Rama Krishna Math, Chennai, पृष्ठ 29

[2] The Complete Works of Swami Vivekanand, Vol. 1 (1936) : Vedanta Press, Vedanta Pl. Hollywood CA, 90068 Page 140

[3] विवेकानन्द (मई, 2018) : भारत का भविष्य, रामकृष्ण मठ, नागपुर, पृष्ठ 162

[4] The Life of Swami Vivekananda : His Eastern and Western Disciples (जनवरी, 2009); भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 632

[5] The life of Swami Vivekanand (Vol. 2) (दिसम्बर 1989) : Advaita Ashrama, Kolkata, पृष्ठ 699

[6] राय, एम०एन० (2022) : India in Transition, Creative Media Partners, LLC, New York पृष्ठ 193